

सूरह नज्म - 53



सूरह नज्म के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है। इस में 62 आयतें हैं।

- इस सूरह का आरंभ नज्म (तारे) की शपथ से हुआ है। इसलिये इस का नाम सूरह नज्म है।
- इस में बह्नी तथा रिसालत से सम्बंधित तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। जिन से ईमान तथा विश्वास पैदा होता है। और ज्योतिष के आरोप का खण्डन होता है।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सम्बंधित संदेहों को दूर किया गया है। जो बह्नी के बारे में किये जाते थे। और आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो कुछ आकाशों में देखा उसे प्रस्तुत किया गया है।
- बह्नी (प्रकाशना) को छोड़ कर मनमानी तथा शिर्क करने और प्रतिफल के इन्कार पर पकड़ की गई है। जिन से इन विचारों का व्यर्थ होना उजागर होता है।
- सदाचारियों को क्षमा और पुरस्कार की शुभ सूचना दी गई है। और इन्कारियों को सोच-विचार का आमंत्रण दिया गया है।
- अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सावधान कर्ता होने का वर्णन है। तथा प्रलय के दिन से सावधान करने के साथ ही अल्लाह ही को सज्दा करने तथा उसी की बंदना करने का आदेश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. शपथ है तारे की, जब वह डूबने लगे!
2. नहीं कुपथ हुआ है तुम्हारा साथी और न कुमार्ग हुआ है।
3. और वह नहीं बोलते अपनी इच्छा से।

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ

وَيَا نَبِيَّطُ عَنْ هَٰؤُلَاءِ

- | | |
|--|---|
| 4. वह तो बस वही (प्रकाशना) है। जो
(उन की ओर) की जाती है। | إِنَّ هُوَ الْأَوَّلَىٰ يُوحَىٰ ۝ |
| 5. सिखाया है जिसे उन को शक्तिवान ने ^[1] | عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۝ |
| 6. बड़े बलशाली ने, फिर वह सीधा
खड़ा हो गया। | ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۝ |
| 7. तथा वह आकाश के ऊपरी किनारे
पर था। | وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝ |
| 8. फिर समीप हुआ, और फिर लटक
गया। | ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝ |
| 9. फिर हो गया दो कमान के बराबर
अथवा उस से भी समीप। | فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۝ |
| 10. फिर उस ने वही की उस (अल्लाह)
के भक्त ^[2] की ओर जो भी वही की। | فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۝ |
| 11. नहीं झुठलाया उन के दिल ने जो
कुछ उन्होंने देखा। | مَا كَذَّبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ۝ |
| 12. तो क्या तुम उन से झगड़ते हो उस
पर जिसे वह (आँखों से) देखते हैं? | أَفَمُرُونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۝ |
| 13. निःसंदेह उन्होंने उसे एक बार और
भी उतरते देखा। | وَلَقَدْ رَاَهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۝ |

1 इस से अभिप्राय जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है जो वही लाते थे।

2 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की ओर। इन आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के जिब्रील (फ़रिश्ते) को उन के वास्तविक रूप में दो बार देखने का वर्णन है। आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने कहा: जो कहे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अल्लाह को देखा है तो वह झूठा है। और जो कहे कि आप कल (भविष्य) की बात जानते थे तो वह झूठा है। तथा जो कहे कि आप ने धर्म की कुछ बातें छुपा लीं तो वह झूठा है। किन्तु आप ने जिब्रील (अलैहिस्सलाम) को उन के रूप में दो बार देखा। (बुखारी: 4855) इब्ने मसूद ने कहा कि आप ने जिब्रील को देखा जिन के छः सौ पंख थे। (बुखारी: 4856)

14. सिद्रतुल मुन्तहा^[1] के पास।
عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَى ۝
15. जिस के पास जन्नतुल^[2] मावा है।
عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَى ۝
16. जब सिद्रह पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था।^[3]
إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَى ۝
17. न तो निगाह चुँधियाई और न सीमा से आगे हुई।
مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَى ۝
18. निश्चय आप ने अपने पालनहार की बड़ी निशानिया देखीं।^[4]
لَقَدْ رَأَى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَى ۝
19. तो (हे मुश्रिकों!) क्या तुम ने देख लिया लात्त तथा उज्जा को।
أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۝
20. तथा एक तीसरे मनात को? ^[5]
وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْاُخْرَى ۝
21. क्या तुम्हारे लिये पुत्र हैं और उस अल्लाह के लिये पुत्रियाँ?
أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنثَىٰ ۝
22. यह तो बड़ा भोंडा विभाजन है।
بَلْكَ إِذَا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ۝
23. वास्तव में यह कुछ केवल नाम है जो तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। नहीं उतारा है अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण। वह केवल अनुमान^[6]
إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مِمَّا أُنْزِلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ يَكْفُرُونَ إِلَّا الظَّنُّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ

1 सिद्रतुल मुन्तहा यह छठें या सातवें आकाश पर बैरी का एक वृक्ष है। जिस तक धरती की चीज़ पहुँचती है। तथा ऊपर की चीज़ उतरती है। (सहीह मुस्लिम: 173)

2 यह आठ स्वर्गों में से एक का नाम है।

3 हदीस में है कि वह सोने के पतिंगे थे। (सहीह मुस्लिम: 173)

4 इस में मेअराज की रात आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आकाशों में अल्लाह की निशानियाँ देखने का वर्णन है।

5 लात्त उज्जा और मनात यह तीनों मक्का के मुश्रिकों की देवियों के नाम हैं। और अर्थ यह है कि क्या इन की भी कोई वास्तविकता है?

6 मुश्रिक अपनी मुर्तियों को अल्लाह की पुत्रियाँ कह कर उन की पूजा करते थे। जिस का यहाँ खण्डन किया जा रहा है।

- पर चल रहे हैं। तथा अपनी मनमानी पर। जब कि आ चुका है उन के पालनहार की ओर से मार्गदर्शन।
24. क्या मनुष्य को वही मिल जायेगा जिस की वह कामना करे?
25. (नहीं, यह बात नहीं है) क्यों कि अल्लाह के अधिकार में है आखिरत (प्रलोक) तथा संसार।
26. और आकाशों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिन की अनुशंसा कुछ लाभ नहीं देती, परन्तु इस के पश्चात् कि अनुमति दे अल्लाह जिस के लिये चाहे तथा उस से प्रसन्न हो।^[1]
27. वास्तव में जो ईमान नहीं लाते परलोक पर, वे नाम देते हैं फ़रिश्तों को स्त्रियों के नाम।
28. उन्हें इस का कोई ज्ञान। नहीं वह अनुसरण कर रहे हैं मात्र गुमान का और वस्तुतः गुमान नहीं लाभप्रद होता सत्य के सामने कुछ भी।
29. अतः आप विमुख हो जायें उस से जिस ने मुँह फेर लिया है हमारी शिक्षा से। तथा वह संसारिक जीवन ही चाहता है।
30. यही उन के ज्ञान की पहुँच है। वास्तव में आप का पालनहार ही अधिक जानता है उसे जो कुपथ हो
- مِنْ رَبِّهِمُ الْهُدَى ۝
- أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمْتَنَى ۝
- فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَى ۝
- وَلَوْ مِنْ مَّالِكَ فِي السَّمَوَاتِ لَا تَعْنِي شَفَاعَةُ سَيِّئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى ۝
- إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتَعْتُونَ الْمَلَائِكَةَ نَسِيَةً الْأُنثَى ۝
- وَاللَّهُمَّ مِنْ عِلْمِ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يَغْنَى مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝
- فَأَعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّى فُجُورًا عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝
- ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَى ۝

1 अरब के मुशरिक यह समझते थे कि यदि हम फ़रिश्तों की पूजा करेंगे तो वह अल्लाह से सिफारिश कर के हमें यातना से मुक्त करा देंगे। इसी का खण्डन यहाँ किया जा रहा है।

गया उस के मार्ग से, तथा उसे जिस ने संमार्ग अपना लिया।

31. तथा अल्लाह ही का है जो आकाशों तथा धरती में है ताकि वह बदला दे जिस ने बुराई की उस के कुकर्म का, और बदला दे जिस ने सुकर्म किया अच्छा बदला।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَاءَ وَاِيْسٰعَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا اِنَّا لَنُحْصِيْهِ ۝

32. उन लोगों को जो बचते हैं, महा पापों तथा निर्लज्जा^[1] से, कुछ चूक के सिवा। वास्तव में आप का पालनहार उदार क्षमाशील है। वह भली-भाँति जानता है तुम को, जब कि उस ने पैदा किया तुम को धरती^[2] से तथा जब तुम भ्रूण थे अपनी माताओं के गर्भ में। अतः अपने में पवित्र न बनो। वही भली-भाँति जानता है उसे जिस ने सदाचार किया है।

لَّذِيْنَ يَحْتَسِبُوْنَ كَثِيْرًا اِلٰنُّهُمْ وَالْفَوَاحِشُ اِلَّا اللَّعْمُ اِنَّ رَبَّكَ وَاَسْمُ الْمَغْفِرَةِ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذَا اُنْشَاكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذَا اَنْتُمْ اَحْصٰهُ فِىْ بَطْنٍ اُمَّهَاتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوْا اَنْفُسَكُمْ هُوَ اَعْلَمُ بِمِنَ اَنْفٰى ۝

33. तो क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुँह फेर लिया?

اَفَرَمِيتَ الَّذِىْ تَوَلٰى ۝

34. और तनिक दान किया फिर रुक गया।

وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْذٰى ۝

35. क्या उस के पास परोक्ष का ज्ञान है

اَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهَوْاْ رٰى ۝

1 निर्लज्जा से अभिप्राय: निर्लज्जा पर आधारित कुकर्म हैं। जैसे बाल-मैथुन, व्यभिचार, नारियों का अपने सौन्दर्य का प्रदर्शन और पर्दे का त्याग, मिश्रित शिक्षा, मिश्रित सभायें, सौन्दर्य की प्रतियोगिता आदि। जिसे आधुनिक युग में सभ्यता का नाम दिया जाता है। और मुस्लिम समाज भी इस से प्रभावित हो रहा है। हदीस में है कि सात विनाशकारी कर्मों से बचो: 1- अल्लाह का साझी बनाने से। 2- जादू करना। 3- अकारण जान मारना। 4- मदिरा पीना। 5- अनाथ का धन खाना। 6- युद्ध के दिन भागना। 7- तथा भोली भाली पवित्र स्त्री को कलंक लगाना। (सहीह बुखारी: 2766, मुस्लिम: 89)

2 अर्थात् तुम्हारे मूल आदम (अलैहिस्सलाम) को।

कि वह (सब कुछ) देख^[1] रहा है?

36. क्या उसे सूचना नहीं हुई उन बातों की जो मूसा के ग्रन्थों में है?

37. और इब्राहीम की जिस ने (अपना वचन) पूरा कर दिया।

38. कि कोई दूसरे का भार नहीं लादेगा।

39. और यह कि मनुष्य के लिये वही है जो उस ने प्रयास किया।

40. और यह कि उस का प्रयास शीघ्र देखा जायेगा।

41. फिर प्रतिफल दिया जायेगा उसे पूरा प्रतिफल।

42. और यह कि आप के पालनहार की ओर ही (सब को) पहुँचना है।

43. तथा वही है जिस ने (संसार में) हँसाया तथा रुलाया।

44. तथा उसी ने मारा और जिवाया।

45. तथा उसी ने दोनों प्रकार उत्पन्न किये: नर और नारी।

46. वीर्य से जब (गर्भाशय में) गिरा।

47. तथा उसी के ऊपर दूसरी बार^[2] उत्पन्न करना है।

أَمْ لَوْ عَلِمْنَا بِمَا فِي صُفْحِ مُوسَىٰ

وَأَبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ

أَلَا سَرِيزٌ وَإِزْدَادٌ وَزَادُ الْآخِرَىٰ

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ

وَأَنَّ سَعْيَهُ سَوْفَ يُرَىٰ

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءُ الْأَوَّلَىٰ

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ

وَأَنَّهُ هُوَ أَضَعَكَ وَأَبْكَىٰ

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا

وَأَنَّهُ خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْآخِرَىٰ

1 इस आयत में जो परम्परागत धर्म को मोक्ष का साधन समझता है उस से कहा जा रहा है कि क्या वह जानता है कि प्रलय के दिन इतने ही से सफल हो जायेगा? जब कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वही के आधार पर जो प्रस्तुत कर रहे हैं वही सत्य है। और अब्बाह की वही ही परोक्ष के ज्ञान का साधन है।

2 अर्थात् प्रलय के दिन प्रतिफल प्रदान करने के लिये।

48. तथा उसी ने धनी बनाया और धन दिया।

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۝

49. और वही शेअरा^[1] का स्वामी है।

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعَرَىٰ ۝

50. तथा उसी ने ध्वस्त किया प्रथम^[2] आद को।

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۝

51. तथा समूद को। किसी को शेष नहीं रखा।

وَسَمُودَ أَهْلًا أَبْقَىٰ ۝

52. तथा नूह की जाति को इस से पहले, वस्तुतः वह बड़े अत्याचारी अवैज्ञाकारी थे।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ۝

53. तथा औंधी की हुई बस्ती^[3] को उस ने गिरा दिया।

وَالْبُؤْسَةَ الْأُمَىٰ ۝

54. फिर उस पर छा दिया जो छा^[4] दिया।

فَغَشَّاهَا مَأِغَصَىٰ ۝

55. तो (हे मनुष्य!) तू अपने पालनहार के किन किन पुरस्कारों में संदेह करता रहेगा।

فَيَأْتِي آلَهِكَ رَبُّكَ فَتَنَّاكَ ۝

56. यह^[5] सचेतकर्ता है प्रथम सचेतकर्ताओं में से।

هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذِيرِ الْأُولَىٰ ۝

57. समीप आ लगी समीप आने वाली।

أَمَّا زَقَنُ الْأَرْقَنُ ۝

58. नहीं है अल्लाह के सिवा उसे कोई दूर करने वाला।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۝

1 शेअरा एक तारे का नाम है। जिस की पूजा कुछ अरब के लोग किया करते थे। (इब्ने कसीर)। अर्थ यह है कि यह तारा पूज्य नहीं, वास्तविक पूज्य उस का स्वामी अल्लाह है।

2 यह हूद (अलैहिस्सलाम) की जाति थे।

3 अर्थात् सालेह (अलैहिस्सलाम) की जाति को।

4 अर्थात् लूत (अलैहिस्सलाम) की जाति की बस्तियों को।

5 अर्थात् पत्थरों की वर्षा कर के उन की बस्ती को ढाँक दिया।

59. तो क्या तुम इस^[1] कुर्आन पर
आश्चर्य करते हो?
60. तथा हँसते हो, और रोते नहीं।
61. तथा विमुख हो रहे हो।
62. अतः सज्दा करो अल्लाह के लिये तथा
उसी की वंदना^[2] करो।

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۖ

وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۖ

وَأَنْتُمْ سَمِدُونَ ۖ

فَاسْجُدْ وَابْتَهِ ۖ وَاعْبُدُوا اللَّهَ ۚ

1 अर्थात् मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) भी एक रसूल हैं प्रथम रसूलों के समान।

2 हदीस में है कि जब सज्दे की प्रथम सूरह: «नज्म» उतरी तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जो आप के पास थे सब ने सज्दा किया एक व्यक्ति के सिवा। उस ने कुछ धूल ली, और उस पर सज्दा किया। तो मैं ने इस के पश्चात् देखा कि वह काफिर रहते हुये मारा गया। और वह उमय्या बिन खलफ है। (सहीह बुखारी: 4863)